परमात्मा — ६

परमात्मा ने वसुन्धरा पर सर्वाधिक बुद्धिमान प्राणी मानव को बनाया है। छः फीट ऊँचा यह प्राणी वनराज की एक थाप नहीं सह सकता, किन्तु उसे पिंजरे में डाल देता है, गजराज की पूँछ के एक झपेटे से होश खो देता है, किन्तु उसके मस्तक पर बैठकर खिलौने की भॉति चलाता है। बिना पंख के आकाश ही नहीं अन्तरिक्ष भी माप डाला और बिना गलफड़ों और जलपंखों के समुद्र का तल तक खोद डाला। किसके बल पर? सिर्फ बुद्धि के बल पर!

कहते हैं मानव भी कभी जंगली था। उसकी बुद्धि क्रमशः विकसित हुई और वह आज का सभ्य मानव बना। धरा के अन्य जीव? किसी की बुद्धि का विकास नहीं हुआ? जीव विज्ञान ने बहुत उन्नति की है। कोई बताए मानव से बड़े और छोटे, अल्पायु और दीर्घायु, दुर्बल और बलवान किसी भी अन्य प्राणी में मानव के समान परिमार्जित बुद्धि का विकास क्यों नहीं हुआ? उनकी शारीरिक संरचना में कहॉ कमी है?

मानव ने उन सबको शासित किया है। उसने मान लिया कि ये सब प्राणी और सृष्टि उसी के बुद्धिबल से विजित सम्पत्ति है! अभिमान में इतना निर्दयी बन गया कि नभचरों में वायुयान, जलचरों में जलयान को छोड़ा और थलचरों में तो मानव मानव तक को खा जाता है।

बुद्धि के इसी अभिमान में मानव ने धारणा बना ली कि मानव शरीर ने धरा और अन्तरिक्ष पर विजय पा ली है! परिमार्जित बुद्धि इसी की बपौती है। ब्रह्माण्ड का नियामक भी मानव शरीरधारी होगा! बना लिए परमात्मा के पुतले। किसी ने क्षीर सागर में रखा, किसी ने चौथे आसमान पर, रखा, किसी ने और ऊँचे सातवें आसमान पर रखा तो किसी ने ताले में जड़ दिया। अरे बेटा बाप को जन्म नहीं दे सकता! जिसने तुझे बनाया है, तू उसे नहीं ही बना सकता। लेकिन संसार का सर्वाधिक बंद्धिमान प्राणी इस विषय में बुद्धि के प्रयोग से मना कर देता है। कहता है गैबी बातें हैं! इन्सानी दखल नहीं हो सकता! जो मानव के मामले में दखल करके आपस में लड़ाकर मार रही है, उन बातों में मानव बुद्धि के दखल से मना करता है।

पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरां, उन्मत्तभूतं जगत् ।

इतने उन्मत्त कि आपसी कलह को मिटाने के लिए जो प्रयास करते है, उन्हें ज़हर दिया जाता है, गोली मारी जाती है, छुरा घोंपा जाता है। देव दयानंद, स्वामी श्रद्धानन्द और पं0 लेखराम तेरा ही तो नाम लेते थे। हे परमात्मा! यह करूण गााथा बड़ी लम्बी है। लेकिन सुनाऊंगा अवश्य! तेरे माध्यम से उन्हें भी सुनाऊंगा, जो भटके हैं!